DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-2 ,UNIT-8,
PREVENTION OF ILLNESSES
LECTURE-76

(3) तृतीयक रोकथाम (TERTIARY PREVENTION)

तृतीयक रोकथाम में मानसिक रोग उत्पन्न हो जाने के बाद उसके प्रभावों को कम करने की कोशिश की जाती है |तृतीयक रोकथाम का मुख्य उद्देश्य किसी रोग से प्रभावित हो जाने के बाद उसके नकारात्मक प्रभावों तथा उसकी अवधि को कम करना होता है |इसमें रोगी को नया कौशल सिखलाया जाता है ताकि वह अपने हीन भाव से लड़ सके तथा उसमे समायोजन एवं सामार्थ्यता की नयी शक्ति उत्पन्न हो सके |इसी रोक-थाम के तहत रोगियों का पुनर्वास,सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य सेवा के प्रति नयी मनोवृति,आंशिक अस्पतालीकरण (PARTIAL HOSPITALIZATION) तथा सामुदायिक लॉज (COMMUNITY

LODGE) चलाने आदि की व्यवस्था होती है |इन सभी साधनों का प्रयोग करके रोगियों से उत्पन्न नकारात्मक प्रभावों से लड़ने की क्षमता में वृद्धि की जाती है ताकि वह अपने भविष्य के साथ ठीक ढंग से समायोजन कर सके |

स्वास्थ्य देख-रेख (HEALTH CARE)में इस ढंग की नयी चेतना के फलस्वरूप टेलर (1978) ने दो महत्वपूर्ण समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया है जिसपर समस्त मनोवैज्ञानिको को गंभीरतापूर्वक सोचना होगा –

(i) अपने बीमारियों के सफल आत्म-प्रबंधन में रोगियों को मिश्रित करने तथा अभिप्रेरित करने में डॉक्टर-रोगी सम्बन्ध का महत्व |

(ii) चिरकालिक बीमारियों के प्रति मनोवैज्ञानिक प्रति-क्रिया को इस तरीके से समझना जिससे रोगी तथा उनके परिवार तनाव के साथ ठीक ढंग से निबट सके |

इन दोनों का वर्णन इस प्रकार है :

(i) अपने बीमारियों के सफल आत्म-प्रबंधन में रोगियों को मिश्रित करने तथा अभिप्रेरित करने में डॉक्टर-रोगी सम्बन्ध का महत्व –

कई अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है की स्वास्थ्य देख-रेख में अंतर वैयक्तिक सम्बन्ध का महत्व होता है |फ्रिडमैन एवं डिमैटेइओ ने इस बात पर बल डाला है की आजकल चिकित्सा शास्त्र के डॉक्टरों द्वारा एक सम्पूर्ण उन्मुखतावादी उपागम का सहारा लिया जाता है जिसमे तकनीकी एवं भौतिक हस्तक्षेपो के अतिरिक्त अन्तरवैयक्तिक कारको को महत्वपूर्ण बतलाया है |उदाहरणस्वरूप किसी भी सर्जरी की सफलता सिर्फ सर्जन के कौशल (skill)तथा औजारों के आधुनिकीकरण पर निर्भर नहीं करता है बल्कि इस बात पर भी निर्भर करता है की हस्तक्षेप देने की प्रक्रिया में सम्मिलित व्यक्तियों का अंतरवैयक्तिक सम्बन्ध द्वारा रोगी को मनोवैज्ञानिक अवस्था किस तरह से प्रभावित हुआ है |संक्षेप में ,तब यह कहा जा सकता है किसी भी उपचार की प्रक्रिया में अंतरवैयक्तिक कारको की उपेक्षा एक वैज्ञानिक त्रुटी होगी |

(ii) चिरकालिक बीमारियों के प्रति मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं को इस तरीके से समझना जिसमे रोगी तथा उनके परिवार तनाव के साथ ठीक ढंग से निबट सके –

उपचार एवं प्रबंधन का एक दूसरा पहलू है दीर्घकालीन बीमारी के प्रति रोगियों की प्रतिक्रिया |समाज मनोवैज्ञानिक यह उत्तम ढंग से अध्ययन कर सकते है की एक रोगी अपने रोग ,उसके कारण तथा वह अपनी हालात में होने वाले परिवर्तनों को किस ढंग से व्याख्या करता है |समाज मनोवैज्ञानिकों का मत है की गुणारोपण सिद्धांत इन प्रक्रियाओं को समझने में काफी लाभदायक होता है |